पर्यटक मानचित्र शृंखला

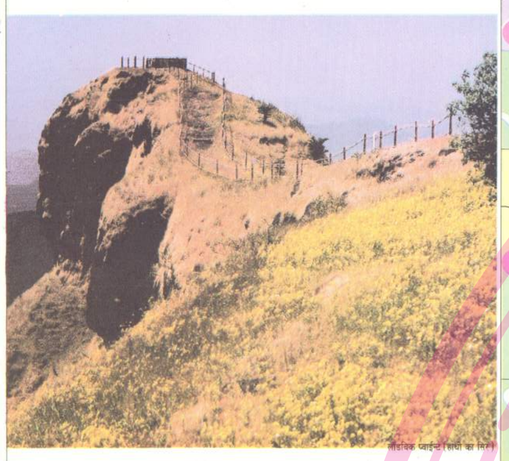

पर्यटक मानचित्र शृंखला

महाबलेश्वर

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग

महाबलेश्वर का उदभव

मई 1825 में कर्नल जॉन ब्रिग्स सातारा के ब्रिटिश प्रतिनिधि महाबलेश्वर एक महीना बिताने के लिये आये जो कि सहयाद्री पर्वतमाला में एक पर्वतीय नगर है। उन्होंने सर जॉन मालकॉम गर्वनर को स्थान के संबंध में बडी शानदार रिपोर्ट भेजी, इन्होंने बाद में उस जगह को ग्रीष्मकालीन पर्यटन स्थल और पर्वतीय पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया। वस्तुत: कुछ समय के बाद उस जगह को "मालकोमपीथ" के रूप में जाना जाने लगा। आजादी के बाद महाबलेश्वर तेजी से उच्चमध्यम वर्गीय भारतीयों के लिये लोकप्रिय पर्वतीय पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हो गया।

देखते ही अचंभा करनेलायक संदर्शनीय स्थान एवं घनी जंगलो के जरिए कठिनाईयों से लंबी यात्रा करने लायक कई मार्ग महाबलेश्वर की शान है। यहाँ जल कीड़ा के लिए एक भव्य सरोवर और बच्चों के मनोरंजन के लिए सुसज्जित पार्क भी है।

महाबलेश्वर के समीप ही पुराना महाबलेश्वर शहर है। जिसमें कई मंदिर हैं और सामान्यतः इस क्षेत्र महाबलेश्वर के नाम से विख्यात है। मुख्य मंदिर भगवान शिव का ह जिसे 'हेमाडपंथी' पद्धति में बनाया है। यादव राजवंश के राजा सिंधन ने 13 वीं शताब्दी में पहलीबार "कृष्णाबाई" मंदिर का निर्माण किया, बाद में शिवाजी महाराज सहित कई राजाओं ने इसका उद्धार एवं विस्तार किया। इस मंदिर में एक गोमुख पत्थर में खोदिन गाय के सिर है जो दक्षिण की नदियाँ –गायत्री, कोयना, कृष्णा, सावित्री एवं वीणा –के मूल स्त्रोंत माने जाते है। दूसरे विख्यात मंदिर क्षेत्र महाबलेश्वर में राम और हनुमान के है।

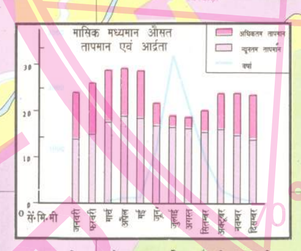

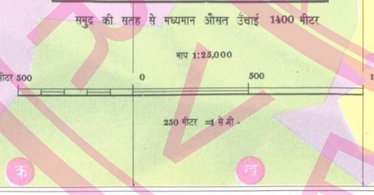

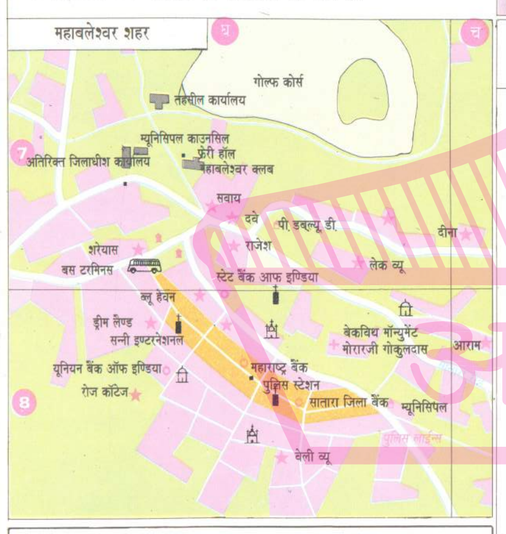

महाबलेश्वर से 19 किलोमीटर वाई सड़क पर पांचगनि स्थित है। पूणे में उस समय के ब्रिटिश आवासीय प्रतिनिधि चार्ल्स मिलेट कार्यालय के किसी अधिकारी द्वारा पहलीबार पांचगनि का जिक हुआ। वह पेशवाँ के साथ नवंबर 1791 में वाई को आया। महाबलेश्वर जाने के लिए उन्हें अनुमति नहीं मिली ताकि मंदिर की पवित्रता भंग न हो। उन्होंने यूरोपवासियों के एक छोटे समूह के साथ पहाड़ पर चढ़े और पहलीवार नए स्थान के बारे में जानकारी देने का श्रेय प्राप्त किया, जो अब पांचगनी के नाम से जाना जाता है।

ईस्ट इण्डिया कंपनी ने 1853 में अपने अधिकारियों की पत्नीयाँ एवं बच्चे अक्सर इग्लैंड जाने के बजाय इधर ही रहने के लिय एक उपयुक्त स्थान का चयन करने के लिए जॉन चेसन से अनुरोध करने पर उन्होनें स्थिर व्यवस्था के रूप में पांचगनी को चुना, जो वह अपने अस्तित्व के लिए जॉन चेस्न के प्रति आभारी है। प्रयोग के तौर पर यहाँ 1854 में उन्होनें खेतीबाड़ी भी शुरू की। वह पांचगनी में रहने से जो फायदें है उनका उल्लेख करते हुए दो किताबें लिखी थीं, जिसमें उन्होनें सेवानिवृत यूरोपवासियों को यहाँ स्ट्राबेरी एवं रसभरी को उगाकर बसने के लिए उचित स्थान के रूप में वर्णित किया। तब से यह एक शिक्षाकेंद्र एवं पहाड़ी सैरगाह के रूप में विकसित किया। जहाँ प्रसिद्ध बोर्डिंग स्कूल एवं अनेक प्रसिद्ध पुरानी शैली के अतिथि-गृह भी है।

प्रतापगढ़ किला जो महाबलेश्वर से 18 कि·मी पश्चिम में स्थित है। यह 1657 में मोरोपंत त्रिंबक पिंगले द्वारा शिवाजी के लिए बनवाया गया था। प्रतापगढ़ का किला बीजापुर जनरल अफजल खान और शिवाजी के मध्य प्रसिद्ध लडाई का स्थल भी था जहाँ पर अफजल खान मारा गया था। इसके बाद से मराठा साम्राज्य एक निर्णायक ताकत के रूप में स्वयं स्थापित हुआ। किले के अंदर अफजल खान का मकबरा, भवानी मंदिर और शिवाजी की मूर्तिया है जो 1957 में बनवायी गयी थीं और जिनका अनावरण उस समय के भारत के प्रधानमंत्री पं· जवाहर लाल नेहरू के करकमलों द्वारा किया गया।

निर्देशिका

शीर्षक संदर्भ

शीर्षक संदर्भ (पांचगनि)

रजि·सं· 5726 द·पु·ब·डी· '04 (एन·जी·डी·सी· –1:25,000)–5000·

भारत के महासर्वेक्षक डा. पृथ्वीश नाग के निदेशन में प्रकाशित, 2004. Published under the direction of Dr. Prithvish Nag, Surveyor General of India.

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, हाथीबड़कला एस्टेट, पो·बा·सं· 37 देहरादून–248001 (उत्तरांचल)।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार

टिप्पणी: उपरोक्त सारणी वर्गसंख्या क्रमश: लाल रंग में एवं संदर्भ संख्या नीले रंग में दर्शाती है, प्रत्येक नाम मानचित्र के अंदर स्थिति को दर्शाते है। जहाँ कहीं संदर्भ संख्या नहीं है, वहाँ नाम स्वयं ही मानचित्र में स्थापित है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के दक्षिणी मुद्रण वर्ग में मुद्रित।

© भारत सरकार का प्रतिलिप्यधिकार, 2004.

मूल्य: बारह रुपये.